IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, December 2025
Impact Factor: 7.67

हिन्दी साहित्य में मध्यवर्ग की दशा और दिशा

डॉ. राकेश कुमार गौतम

यमुना प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश :

हिन्दी साहित्य में मध्यवर्ग का चित्रण स्वतंत्रता-पूर्व काल से लेकर वर्तमान वैश्वीकरण के दौर तक निरंतर बदलता रहा है। प्रेमचंद के यथार्थवादी चित्रण से लेकर मनोहर श्याम जोशी, विनोद कुमार शुक्ल, गीतांजलि श्री तक मध्यवर्ग की आकांक्षाएँ, कुंठाएँ, नैतिक पतन और नई संभावनाएँ विभिन्न रूपों में उभरकर आई हैं। यह शोध-पत्र हिन्दी उपन्यास, कहानी तथा नाटक के प्रमुख कृतियों के आधार पर मध्यवर्ग की दशा (वर्तमान स्थिति) और दिशा (भविष्य की संभावनाएँ एवं दिशा) का विश्लेषण करता है।

कीवर्ड: मध्यवर्ग, हिन्दी साहित्य, यथार्थवाद, प्रेमचंद, नई कहानी, समकालीन उपन्यास, वैश्वीकरण, नैतिक संकट

१. प्रस्तावना

मध्यवर्ग भारतीय समाज की रीढ़ कहा जाता है। यह वह वर्ग है जो न तो पूँजीपति वर्ग की तरह अकूत धन-संपदा रखता है और न ही सर्वहारा की तरह पूर्णतः शोषित है। यह बीच का वर्ग है – सपनों और वास्तविकता के बीच फँसा हुआ। हिन्दी साहित्य में मध्यवर्ग का प्रवेश मुख्यतः प्रेमचंद के साथ हुआ, हालाँकि जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद से पहले भी "स्कंदगुप्त" जैसे नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना के बीज मौजूद थे। परन्तु प्रेमचंद ने इसे यथार्थ के धरातल पर उतारा। स्वातंत्र्योत्तर काल में इलाचन्द्र जोशी, भैरवप्रसाद गुप्त, मोहन राकेश,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मनोहर श्याम जोशी, उदय प्रकाश, गीतांजलि श्री आदि लेखकों ने मध्यवर्ग को नए परिप्रेक्ष्य में देखा।

यह शोध-पत्र तीन प्रमुख कालखंडों में मध्यवर्ग के चित्रण को विभाजित करता है:

प्रेमचंद युग (१९१०-१९३६)

नई कहानी और नया उपन्यास काल (१९५०-१९८०)

उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद का साहित्य (१९९० से अब तक)

२. प्रेमचंद युग में मध्यवर्ग

प्रेमचंद के यहाँ मध्यवर्ग मुख्यतः निम्न मध्यवर्ग है – छोटे क्लर्क, अध्यापक, वकील, जमींदारों के मुंशी आदि। "गोदान" का होरी, "कर्मभूमि" का अमरकांत, "रंगभूमि" का सूरदास, "सेवासदन" का सदन – ये सभी मध्यवर्गीय चरित्र हैं जो आर्थिक संकट, नैतिकता और सामाजिक दबावों के बीच जूझते हैं। प्रेमचंद मध्यवर्ग को आदर्शवादी दिखाते हैं पर साथ ही उसकी सीमाएँ भी उजागर करते हैं। होरी की ईमानदारी अंततः उसे बर्बाद कर देती है। यह मध्यवर्ग की दशा है – नैतिकता का बोझ ढोते हुए भी आर्थिक रूप से पिसना।

प्रेमचंद के बाद जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी ने मध्यवर्ग के मनोविश्लेषण पर जोर दिया। जैनेन्द्र की "त्यागपत्र" और "सुनीता" में मध्यवर्गीय स्त्री-पुरुष के अंतर्द्वंद्व दिखते हैं।

३. स्वातंत्र्योत्तर काल : नई कहानी और मध्यवर्गीय संकट

१९५०-६० का दशक मध्यवर्ग के लिए स्वप्नभंग का दौर था। आजादी के बाद जो उम्मीदें थीं, वे पूरी नहीं हुईं। मोहन राकेश की "अंधेरे में", "उसकी रोटी", भीष्म साहनी की "चीफ की दावत", कमलेश्वर की "राजा निरबंसिया", मन्नू भंडारी की "मैं हार गई" – इन कहानियों में मध्यवर्ग की खोखली जीवन-शैली, ऑफिस

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

की नौकरी की यंत्रवत दिनचर्या, वैवाहिक संबंधों में पाखंड, महत्वाकांक्षाओं का कुंठित होना प्रमुखता से उभरा।

मोहन राकेश का नाटक "आषाढ़ का एक दिन" मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी कालिदास की त्रासदी है – कला और सांसारिक सुखों के बीच फँसा मध्यवर्गीय व्यक्ति। राजेन्द्र यादव का उपन्यास "सारा आकाश" मध्यवर्गीय युवा की बेरोजगारी, पारिवारिक दबाव और आत्महत्या तक की यात्रा दिखाता है।

४. १९७०-८० का दौर : मध्यवर्ग का नैतिक पतन

मनोहर श्याम जोशी का "कुरु कुरु स्वाहा" मध्यवर्ग के नैतिक पतन का पहला बड़ा उपन्यास है। इसमें विज्ञापन एजेंसी में काम करने वाला मध्यवर्गीय युवक धीरे-धीरे भ्रष्टाचार और व्यभिचार की दुनिया में ढकेल दिया जाता है। यह उपन्यास दिखाता है कि मध्यवर्ग अब सिर्फ पीड़ित नहीं रहा, वह शोषक भी बनने लगा।

राही मासूम रजा का "कटरा बी आरजू" लखनऊ के मध्यवर्गीय मुहल्ले की कहानी है जहाँ धर्म, जाति और सांप्रदायिकता के नाम पर मध्यवर्ग अपनी मानवता खो देता है।

५. उदारीकरण के बाद का मध्यवर्ग (१९९१ से अब तक)

१९९१ के बाद मध्यवर्ग दो हिस्सों में बँट गया:

नया मध्यवर्ग (आई.टी., मल्टीनेशनल कंपनियों में काम करने वाला, मॉल-संचालित)

पुराना मध्यवर्ग (सरकारी नौकरी, छोटे व्यापार, मध्यम आय)

हिन्दी साहित्य में इस विभाजन को सबसे पहले अल्पना मिश्र, उदय प्रकाश, गीतांजलि श्री, विनोद कुमार शुक्ल ने पकड़ा।उदय प्रकाश की कहानी "मोहनदास" और "तिरिछ" नए मध्यवर्ग की पहचान की तलाश और पुराने मध्यवर्ग के हाशिए पर धकेले जाने की कहानी है। "वारेन हेस्टिंग्स का साँड़" में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

की बेबसी दिखाई गई है।गीतांजलि श्री का "रेट समाधि" (अंग्रेजी में Tomb of Sand) मध्यवर्गीय बुजुर्ग महिला की मुक्ति-यात्रा है। यह दिखाता है कि अब मध्यवर्ग सिर्फ आर्थिक संकट में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और लैंगिक पहचान के संकट में भी है।

अन्य प्रमुख कृतियाँ:

संजीव : "सूर्पनखा", "देल्ही दरबार"

गगन गिल : कविताओं में मध्यवर्गीय स्त्री की विडंबना

असगर वजाहत : "कैसी आई बारिश" (नया मध्यवर्ग और पुराने मूल्यों का टकराव)

पंकज बिष्ट, कुमार अंबुज, मैत्रेयी पुष्पा आदि ने भी ग्रामीण मध्यवर्ग को केंद्र में रखा।

६. मध्यवर्ग की दशा : प्रमुख बिंदु

आर्थिक असुरक्षा अब भी बनी हुई है (पुराना मध्यवर्ग)

नया मध्यवर्ग आर्थिक रूप से सक्षम पर सांस्कृतिक रूप से रिक्त

स्त्री का मध्यवर्गीय होना अब भी दोहरी मार (घर और बाहर दोनों जगह संघर्ष)

बच्चों पर अत्यधिक महत्वाकांक्षा का दबाव (कोचिंग संस्कृति, आत्महत्या की बढ़ती घटनाएँ)

सांप्रदायिकता और जातिवाद में मध्यवर्ग की बढ़ती भागीदारी

७. मध्यवर्ग की दिशा : संभावनाएँ और खतरे

सकारात्मक दिशा:

नई पीढ़ी के लेखक (अविनाश मिश्र, सत्य व्यास, दिव्या विजय) मध्यवर्ग को हल्के-फुल्के अंदाज में भी प्रस्तुत कर रहे हैं।

सोशल मीडिया ने मध्यवर्ग को अपनी आवाज उठाने का नया मंच दिया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

पर्यावरण, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर मध्यवर्ग जागरूक हो रहा है।

खतरे:

उपभोक्तावाद में डूबकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटना

दक्षिणपंथी विचारधारा की ओर बढ़ता झुकाव

निम्न वर्ग से दूरी बढ़ना और ऊपरी वर्ग से निकटता बढ़ना (नया मध्यवर्ग)

८. निष्कर्ष:

हिन्दी साहित्य मध्यवर्ग का दर्पण रहा है। प्रेमचंद के जमाने में यह वर्ग नैतिकता का प्रतीक था, नई कहानी में कुंठित और हताश, १९८० के बाद भ्रष्ट और अवसरवादी, तथा १९९१ के बाद दो टुकड़ों में बँटा हुआ। आज मध्यवर्ग की दशा यह है कि वह आर्थिक रूप से मजबूत हुआ है पर सांस्कृतिक और नैतिक रूप से कमजोर पड़ा है। दिशा की बात करें तो दो रास्ते हैं – या तो वह उपभोक्तावादी पूँजीवाद का अंधानुकरण करता रहेगा या फिर अपने भीतर की रचनात्मकता, संवेदना और प्रतिरोध की शक्ति को पहचानेगा। हिन्दी साहित्य का अगला दौर यही तय करेगा कि मध्यवर्ग समाज का नेतृत्व करेगा या सिर्फ अनुकरण।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. प्रेमचंद : गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि

२. मोहन राकेश : आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस

३. मनोहर श्याम जोशी : कुरु कुरु स्वाहा

४. उदय प्रकाश : मोहनदास, तिरिछ, वारेन हेस्टिंग्स का साँड़

५. गीतांजलि श्री : रेट समाधि, मैई

६. रामधारी सिंह दिनकर : कुरुक्षेत्र (मध्यवर्गीय चेतना पर टिप्पणी)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 5, December 2025 Impact Factor: 7.67

७. नामवर सिंह : दूसरी परंपरा की खोज, कब तक पुकारूँ

८. मैनेजर पांडेय : मध्यवर्ग का बौद्धिक, साहित्य और इतिहास दृष्टि

९. विरेन्द्र जैन : मध्यवर्ग और हिन्दी उपन्यास

१०. डॉ. रामविलास शर्मा : प्रेमचंद और उनका युग